

पद ११५

(राग: जोगिया, कालंगडा - ताल: धुमाळी)

वृत्ति जगि स्फुरली बा मनिं (मज) स्फुरली। स्फुरली तेथें
मुरली॥ध्रु॥ चिदाकाश अमित आत्मा। दर्पणि अणु दिसे मायिक
महिमा॥१॥ उपाधि गुणावलंबी। बिंब स्थिर चंचल
प्रतिबिंबी॥२॥ निमित्त परिणामी जगचित्र। आत्म-माया दावि
स्वतंत्र॥३॥ शक्ति नसे जरि ब्रह्मी। तरि तें ब्रह्म नव्हे जड धर्मी॥४॥
निरपेक्ष मी सहजीं। स्फुरतों तद्रूप विषय समाधि॥५॥ इंद्रियसुख

संपत्ति। प्रगटे अस्ति भाति आणि प्रीति॥६॥ जागृति दरिद्री रोगी।
स्वप्नीं सार्वभौम सुख भोगी॥७॥ निरुपाधिक मज पाहतां। नाहीं
ज्ञान ज्ञेय आणि ज्ञाता॥८॥ ज्ञानकिरण मार्ताण्ड। व्यापक पूर्ण
सकल ब्रह्मांड॥९॥